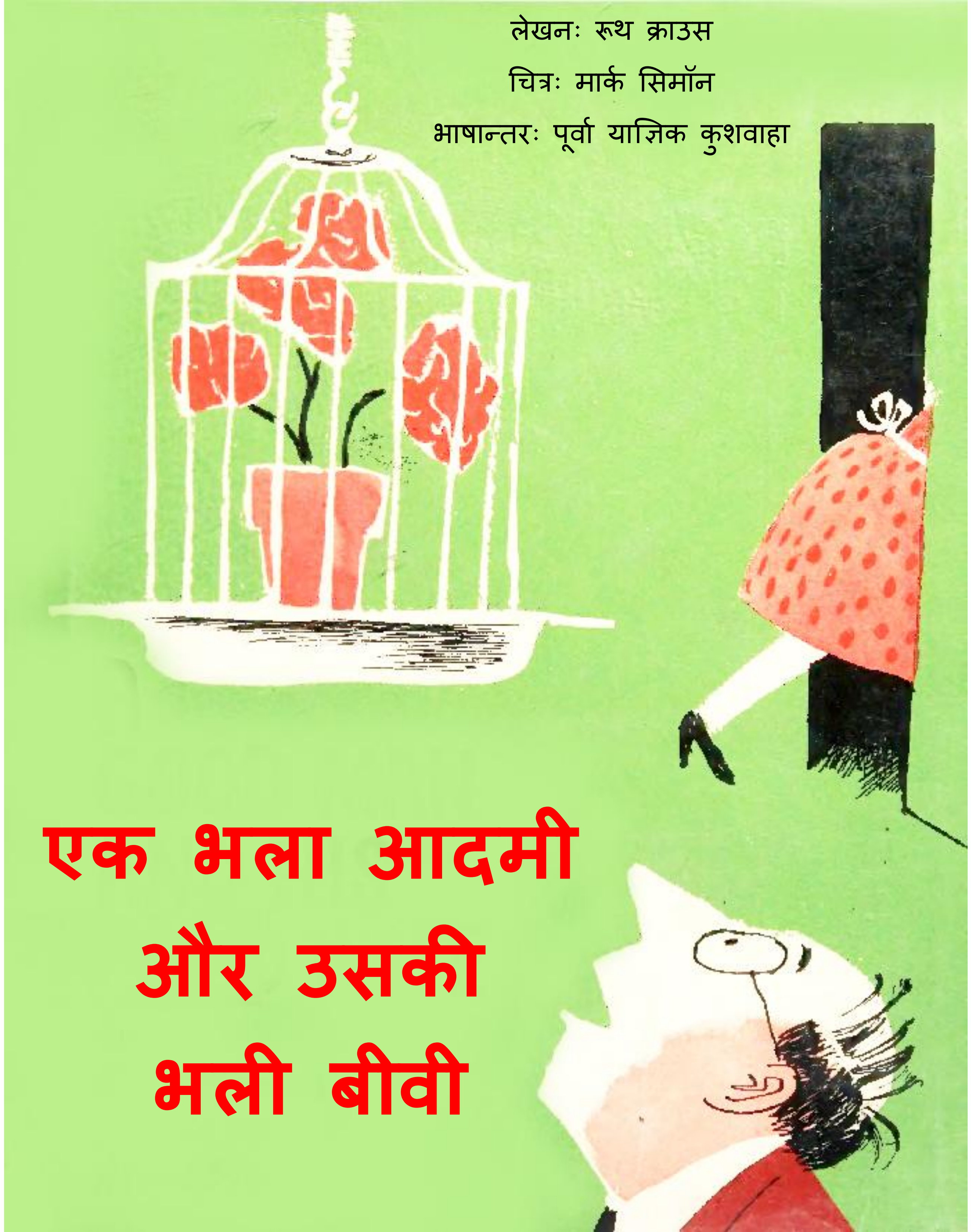
लेखनः रूथ क्राउस

चित्रः मार्क सिमॉन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



# एक भला आदमी और उसकी भली बीवी

**एक भला आदमी और उसकी बीवी** बड़ी ख़ुशी से रहते थे, सिवा इसके कि भले आदमी को उसकी चीज़ें मिलती ही नहीं थीं। उसकी भली बीवी घर की कुर्सियों, मेज़ों, उसके कपड़ों तक को एक जगह से दूसरी जगह रख दिया करती थी। इसलिए क्योंकि वह उसी चीज़ को उसी जगह देख-देख कर बेहद थक जाती थी। भला आदमी अपनी कैनरी चिड़िया को चुग्गा देने जाता तो उसे चुग्गा नहीं मिलता था। और अगर ढूंढ़-ढांढ कर मिल भी जाता तो भी कोई फायदा न होता, क्योंकि तब उसे चिड़िया नहीं मिलती। उसकी बीवी हर चीज़ की जगह बदल देती थी। आख़िरकार भले आदमी ने एक दिन कहा, "यह तो बेवकूफी है!" और उसने इस बारे में कुछ करने का फैसला किया।

**रूथ क्राउस** की इस पहली पुस्तक को फिर से प्रकाशित किया जा रहा है। इसके चित्र कॉलडेकॉट पुरस्कार विजेता मार्क सिमॉन ने फिर से बनाए हैं। जो बच्चे **रूथ क्राउस** की अन्य पुस्तकों से परिचित हैं, उन्हें इस किताब में भी उतना ही मज़ा आएगा जितना 1944 में पहली बार छपी इस किताब को पढ़ उनके माता-पिता को आया होगा।

# एक भला आदमी और उसकी भली बीवी

लेखनः रूथ क्राउस

चित्रः मार्क सिमॉन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



एक समय एक भला आदमी और

उसकी भली बीवी एक शहर रहते थे।



वे एक सुन्दर मकान में रहते थे।

मकान की दीवारें सफेद थीं और परदे लाल थे,

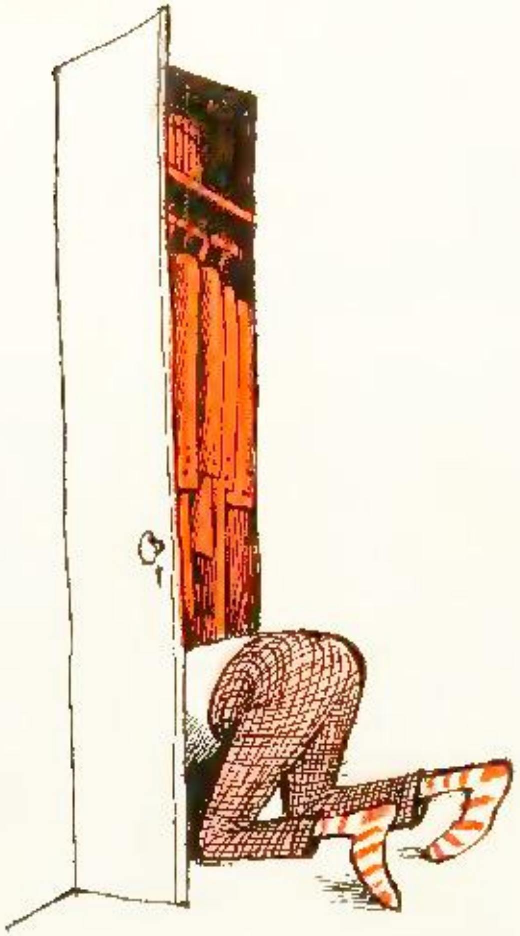
और उसमें ढ़ेरों छोटे-छोटे आले

और कई सुविधाजनक ताकें थीं।



वह भला आदमी और उसकी भली बीवी खुश थे,

सिवा इसके कि भले आदमी को अपनी चीज़ें कभी अपनी जगह पर मिलती ही नहीं थीं।



वह अपने जूते ढूंढ़ता

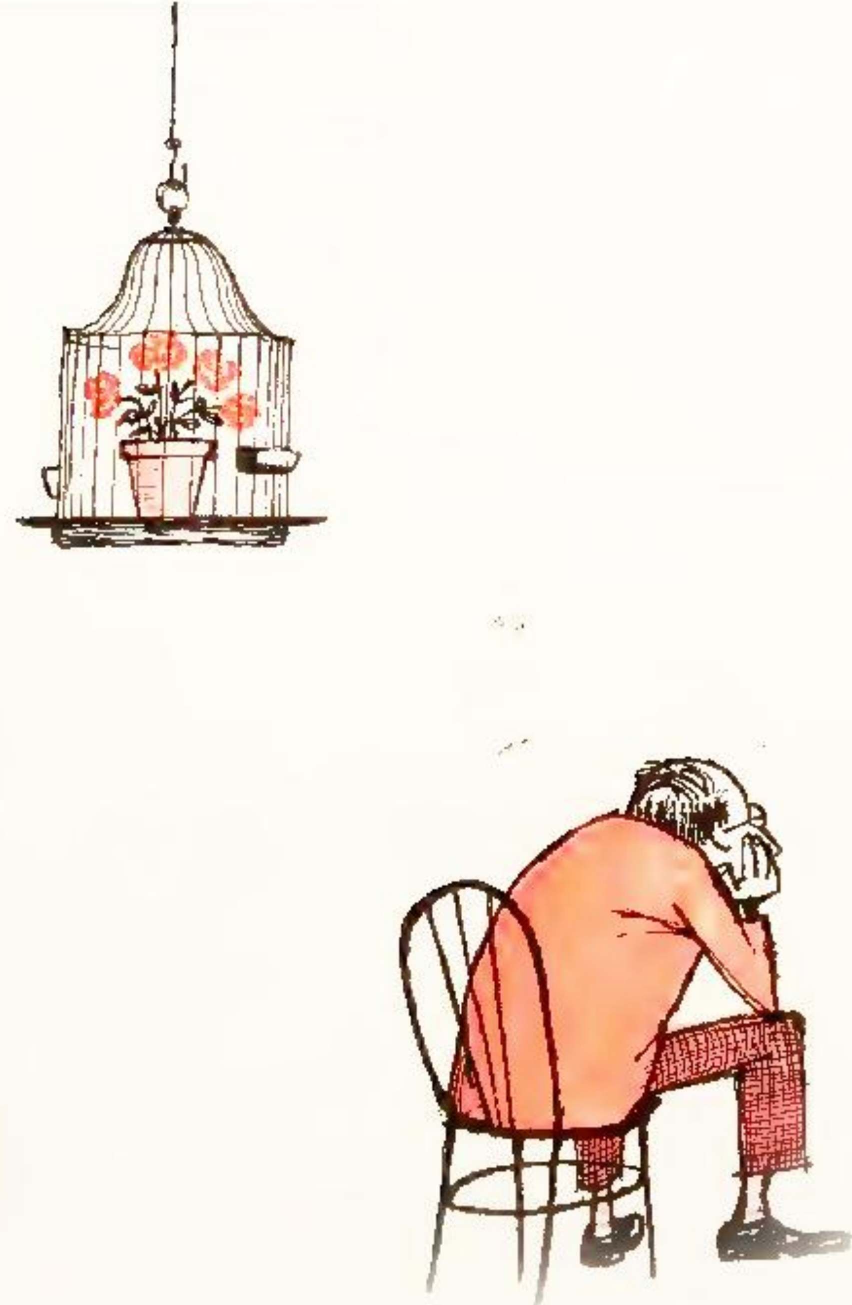
पर उसे जूते मिलते ही नहीं।



वह अपनी किताब ढूंढ़ता

उसे किताब नहीं मिलती।



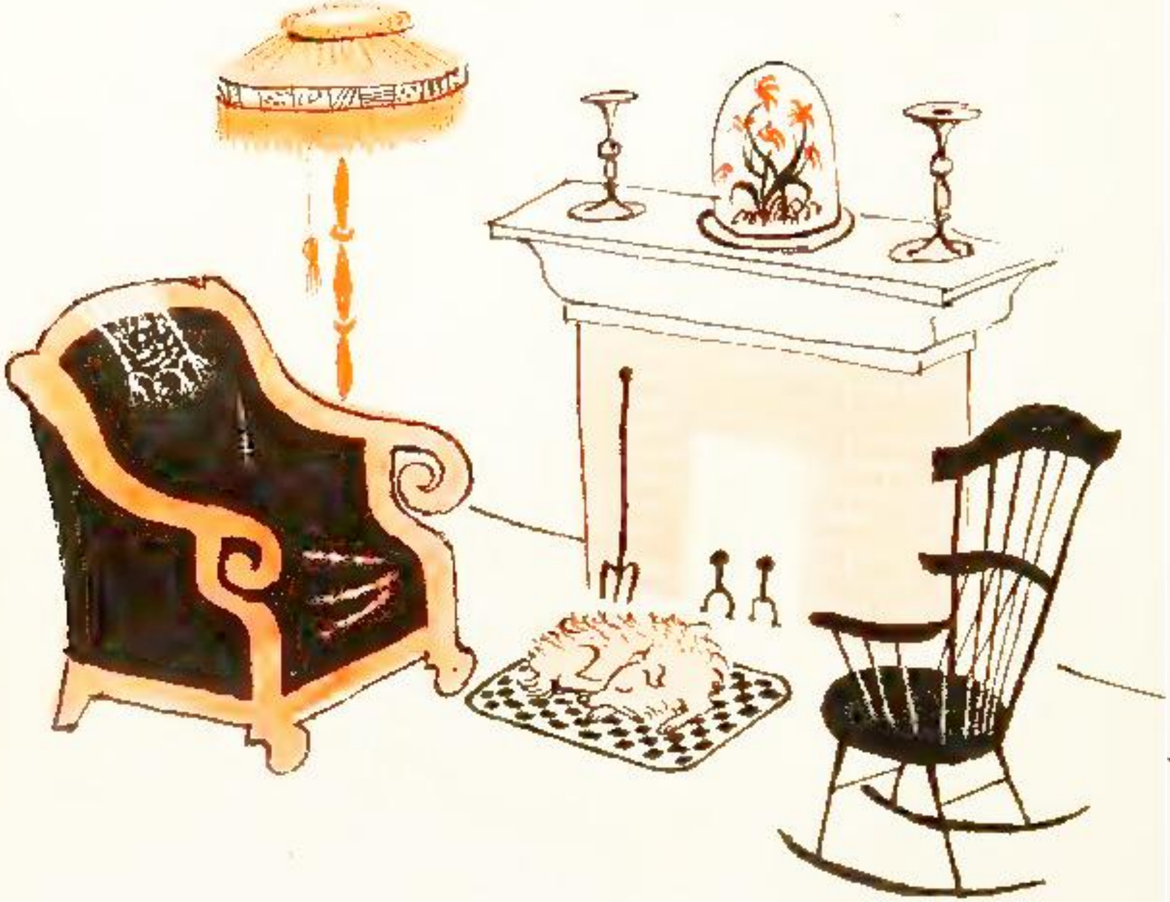


वह अपनी चिड़िया को चुग्गा देने ऊपर जाता

तो उसे चुग्गा नहीं मिलता।

चुग्गा मिल भी जाता तो कोई फायदा नहीं होता

क्योंकि उसे चिड़िया नहीं मिलती। उसे कुछ भी नहीं मिलता।





तब भला आदमी कहता, ''क्या बकवास है!''

वह कमरे में आगे-पीछे घूमता, अपना सिर हिलाता

और ज़ोर से कहता, ''यह सचमें बकवास है!''



पर इसमें भले आदमी की कोई गलती नहीं थी।

उसे कोई भी चाज़ इसलिए नहीं मिलती थी क्योंकि उसकी भली बीवी

सब कुछ जगह से हटा देती थी। वह बैठक की मेज़ को बैठक के बीच से

रसोई के कोने में रख देती, और रसोई के बीच रखी मेज़ उठा

बाग के सेब के पेड़ के नीचे रख देती थी।

वह कहती, "मेरे प्यारे, मैं उसी चीज़ को ठीक उसी जगह देखते-देखते थक जाती हूँ।"

चीज़ों की जगह बदलने के बाद वह कुछे पीछे हट अपने काम को तीरीफ़ की नज़रों से देखती थी।





वह अपने भले पति के इतवार को पहनने वाले कपड़े

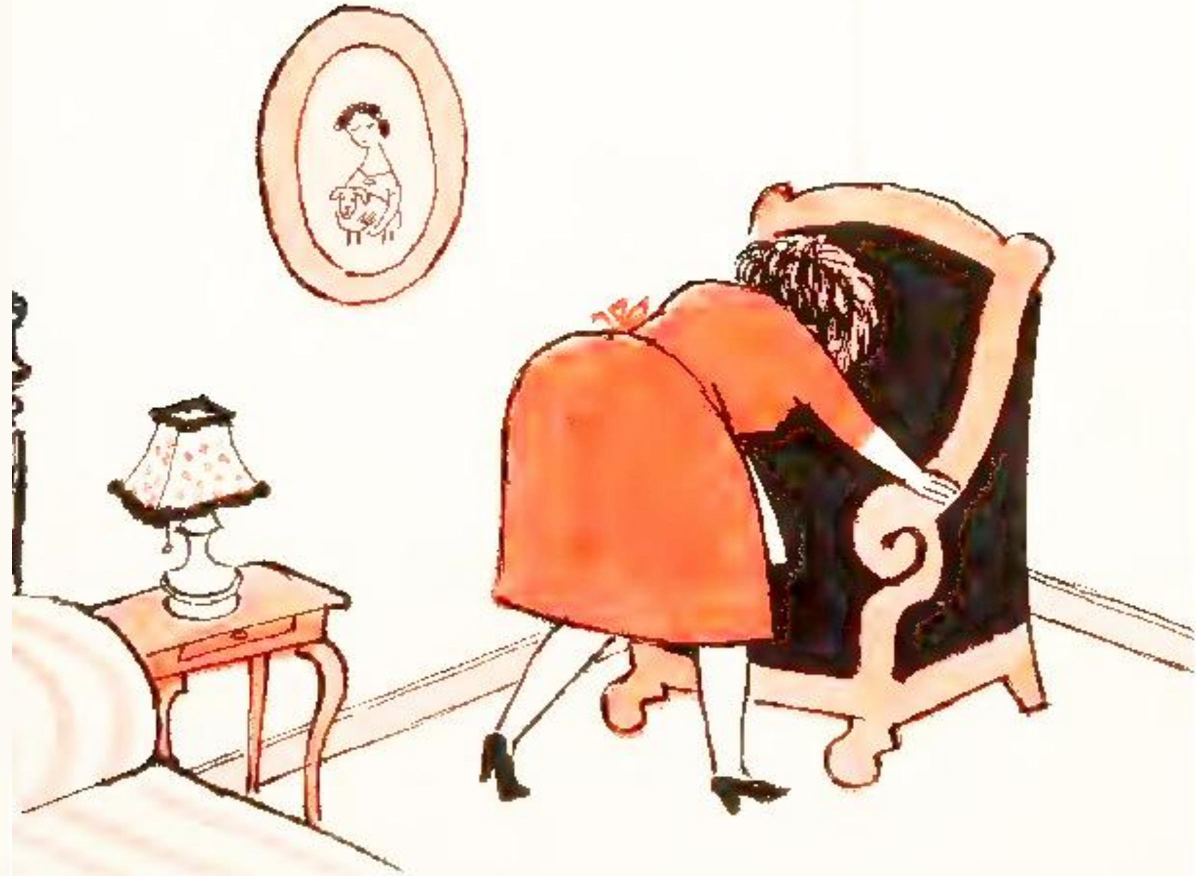
भले आदमी की अल्मारी से हटा,

दुछत्ती वाली अल्मारी में रख देती।

वह अपने सोने के कमरे के बिस्तर के ऊपर लगी घड़ी को उठा

बैठक में अलाव के पास बने आले के आखिर में रख देती।





वह भले आदमी की अलाव के पास रखी पसन्दीदा कुर्सी को

उसकी जगह से हटा सोने के कमरे के कोने में रख देती।

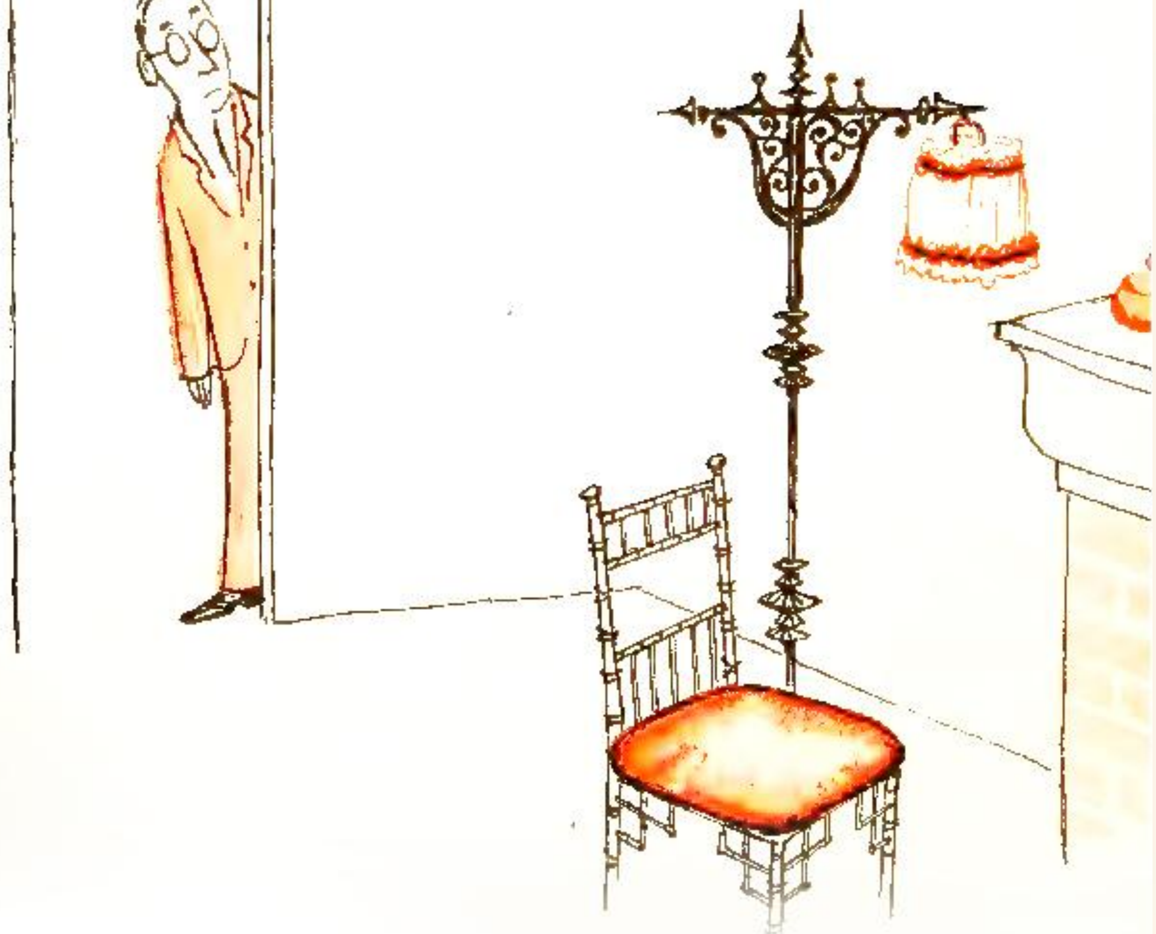


वह अपने छोटे से घर की हरेक चीज़ को हटाती रहती।

वह कहती, ''हाँ, हाँ, मैं उसी चीज़ को उसी जगह देख-देख बेहद थक जाती हूँ!''

और तब संतोष से भर अपने एप्रन की सलवटें दूर करती।





तब भले आदमी को फिर से यह सीखना

पड़ता कि कौन सी चीज़ अब कहाँ है।




पर जब तक भला आदमी यह सीखता की उसकी मछली पकड़ने की बंसियाँ

पैंट्री के पास वाली झाड़ुओं की अल्मारी में हैं,

और चुग्गा सीढ़ियों के नीचे वाले छोटे आले में है,

सब कुछ फिर से बदल जाता।

तब वह नाराज़ होता और चीखता, "क्या बकवास है!"

यों हैरान-परेशान भले आदमी ने एक दिन यह तय किया

कि वह इस बारे में कुछ करेगा।

उसने खुद से कहा, "मैं इस बारे मे कुछ करूंगा," और मुस्कुराया।

"मैं इस मसले को हमेशा के लिए हल कर दूंगा।"







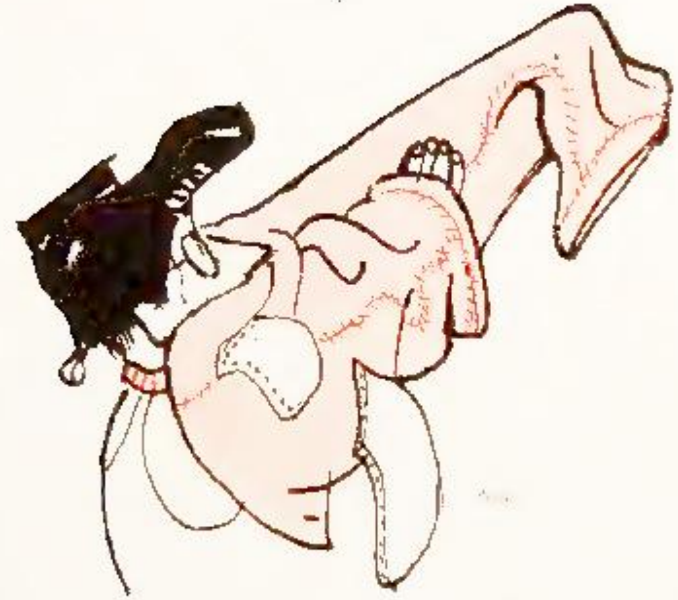


और उसने इस बारे में कुछ किया,

उसने अपना जूता सिर पर पहना।

अपनी पतलून की गैलिस गले के गिर्द पहनी।

अपनी टाई घुटने पर बांधी



उसने अपनी पतलून कोट की तरह पहनी

और अपना कोट पतलून की तरह,

और दोनों ही उलट कर पहने।





उसने अपने चश्मे कोहनी पर लगाए।

अपने मोज़े कानों पर लटकाए।

तब वह घिसटता हुआ सीढ़ियों से नीचे आया।



वह नाश्ते की मेज़ पर बैठा और अपने नैपकिन को खाने लगा।

और बिस्कुट से अपना मुँह पोंछने लगा।





जब उसकी भली बीवी ने उसे देखा, उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं।

उसके हाथ की तश्तरियाँ छूट कर गिर पड़ीं। उसने चौंक कर मुँह फाड़ा,

और अपने हाथ ऊपर उठाए।

वह चीखी, "यह क्या बेवकूफी है!"

भले आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया, अपने नैपकिन पर

मक्खन लगाता रहा और उसके टुकड़े चबाता रहा,

और अपने चेहरे को बिस्किट से पोंछता रहा।

उसके गले में लटके गैलिस झुनझुनाते रहे।

और कान के मोज़े फड़फड़ाते रहे।



और जब उसकी भली बीवी फिर से चीखी, ''सचमें,

यह सरासर बेवकूफी है, यह तो हद दर्जे की बेवकूफी है!''

भले आदमी ने धीमे से कहा, ''मेरी जान, मैं उसी चीज़ को

उसी जगह देख सचमें थक जाता हूँ।

और इस तरह भले आदमी ने अपनी भली बीवी की

उस ख़राब आदत का इलाज किया।



और वे दोनों पहले से भी ज़्यादा खुशी से

अपने सुन्दर घर में रहने लगे

जिसकी दीवारें सफेद थीं और पर्दे लाल,

जिसमें कई छोटे-छोटे आले और सुविधाजनक ताकें थीं।

और आजकल जब भले आदमी को कोई किताब पढ़नी होती है,

तो उसे पता होता है कि वह किस अल्मारी में मिलेगी।



**रूथ क्राउस** बच्चों के अनेक उम्दा किताबों की लेखिका हैं। उनका जन्म बॉल्टीमोर में हुआ। उन्होंने कला व संगीत का अध्ययन किया। वे न्यू यॉर्क शहर के पार्सन्स स्कूल ऑफ फाइन एण्ड अप्लाइड आर्टस् की स्नातक हैं। उन्होंने कुछ समय लन्दन में बिताया, और बाद में मेन से लेकर वर्जीनिया तक के एटलांटिक सागर के तट पर बसे विभिन्न शहरों में रहीं। अब वे अपने पति के साथ रॉयटन, कनैटिकट में रहती हैं।

**मार्क सिमॉन** को 1956 में जेनिस उड्राय की पुस्तक *अ ट्री इज़ नाइस* को चित्रित करने के लिए कॉलडेकॉट पुरस्कार दिया गया था। उनका जन्म पेरिस में हुआ था। उन्होंने पेरिस, बार्सिलोना और न्यू यॉर्क में कला का अध्ययन किया। उन्होंने अनेक लोकप्रिय पुस्तकों को चित्र दिए हैं। *इ लवली समर, मीमी, द प्लम्बर आउट ऑफ द सी, तथा द कॉन्टैस्ट एट पाका* जैसी लोकप्रिय कृतियों की उन्होंने ही रचना की और उन्हें चित्रित भी किया।